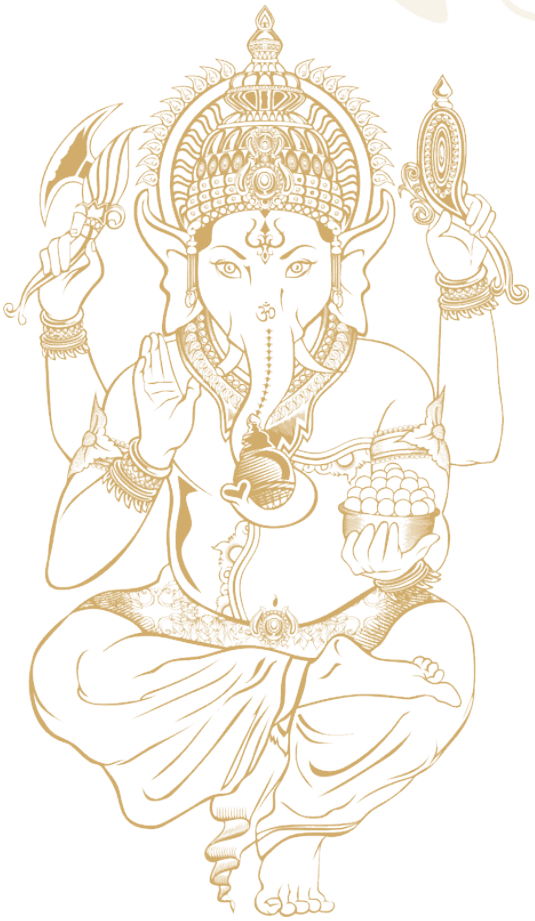

Mr.

15 Apr 2026

08:29 PM

Delhi

Model: Baby-Horoscope **Order No: 121945101**

तिथि 15/04/2026 **समय** 20:29:00 **वार** बुधवार **स्थान** Delhi **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:33
अक्षांश 28:39:00 उत्तर **रेखांश** 77:13:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:21:08 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	09:43:00 घं
वेलान्तर	00:00:05 घं
सूर्योदय	05:56:09 घं
सूर्यास्त	18:46:46 घं
चैत्रादि संवत	2083
शक संवत	1948
मास	वैशाख
पक्ष	कृष्ण
तिथि	13
नक्षत्र	उ०भाद्रपद
योग	ऐन्द्र
करण	वणिज

अवकहड़ा चक्र

गण	मनुष्य
योनि	गौ
नाड़ी	मध्य
वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
वर्ग	सर्प
युँजा	अन्त्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	दू-दूधेश्वर
पाया(रा.-न.)	स्वर्ण-लौह
होरा	बुध
चौघड़िया	शुभ

विंशोत्तरी

शनि 14वर्ष 9मा 0दि
शनि
15/04/2026
15/01/2041

	15/04/2026
बुध	28/09/2027
केतु	06/11/2028
शुक्र	06/01/2032
सूर्य	18/12/2032
चन्द्र	20/07/2034
मंगल	28/08/2035
राहु	04/07/2038
गुरु	15/01/2041

योगिनी

भद्रिका 3वर्ष 10मा 17दि
भद्रिका
15/04/2026
03/03/2030

	15/04/2026
उल्का	12/09/2026
सिद्धा	02/09/2027
संकटा	12/10/2028
मंगला	02/12/2028
पिंगला	13/03/2029
धान्या	12/08/2029
भ्रामरी	03/03/2030

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			24:10:59	तुला	विशाखा	2	गुरु	बुध	---	0:00			
सूर्य			01:25:36	मेष	अश्विनी	1	केतु	शुक्र	उच्च राशि	1.89	कलत्र	पितृ	विपत
चंद्र			06:18:51	मीन	उ०भाद्रपद	1	शनि	बुध	सम राशि	1.49	ज्ञाति	मातृ	जन्म
मंगल		अ	10:17:21	मीन	उ०भाद्रपद	3	शनि	शुक्र	मित्र राशि	1.15	मातृ	भ्रातृ	जन्म
बुध			06:27:33	मीन	उ०भाद्रपद	1	शनि	बुध	नीच राशि	1.22	पुत्र	ज्ञाति	जन्म
गुरु			22:48:11	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	शनि	शत्रु राशि	1.09	अमात्य	धन	अतिमित्र
शुक्र			25:21:20	मेष	भरणी	4	शुक्र	बुध	सम राशि	1.39	आत्मा	कलत्र	क्षेम
शनि		अ	13:07:11	मीन	उ०भाद्रपद	3	शनि	राहु	सम राशि	1.09	भ्रातृ	आयु	जन्म
राहु	व		13:51:59	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	बुध	मित्र राशि		---	ज्ञान	मित्र
केतु	व		13:51:59	सिंह	पू०फाल्गुनी	1	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	क्षेम

लग्न-चलित

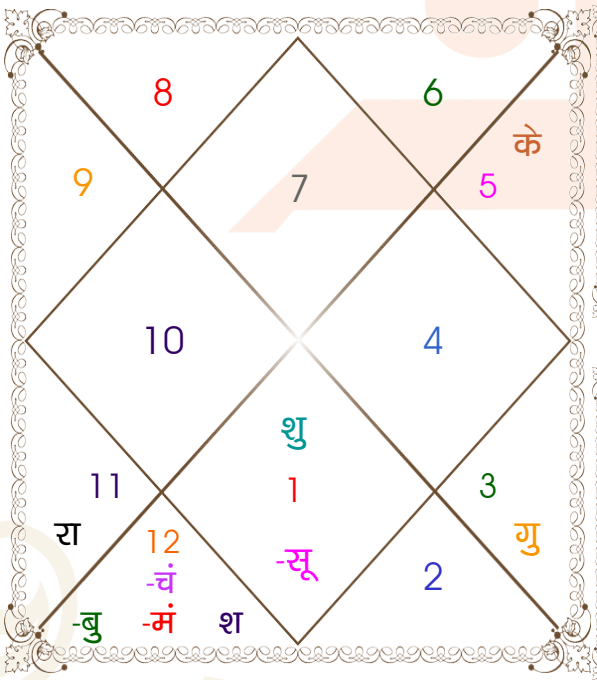

चन्द्र कुंडली

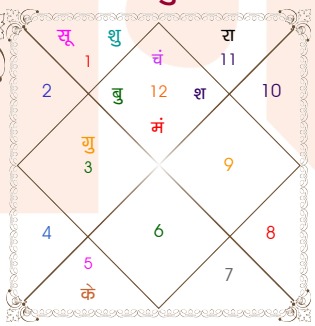

नवमांश कुंडली

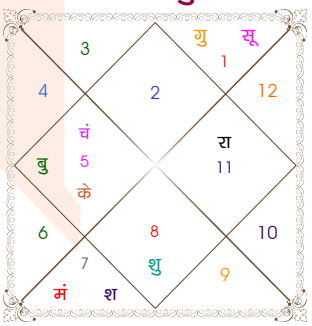

सर्वाष्टकवर्ग

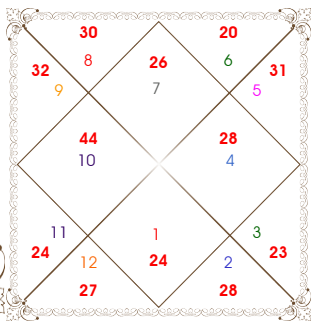

दशमांश कुंडली

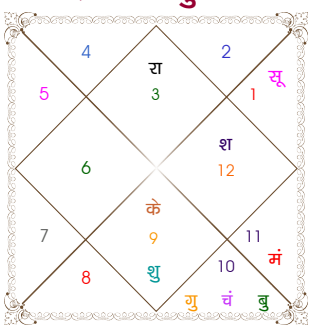

नक्षत्रफल

आप का जन्म उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि मीन तथा राशि स्वामी वृहस्पति होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण ब्राहमण, योनि गौ, गण मनुष्य, नाड़ी मध्य तथा वर्ग सर्प होगा। नक्षत्र के प्रथम चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "दु" या "दू" अक्षर से होगा यथा- दुष्यन्त आदि।

आप अपने परिवार या कुल में सर्वश्रेष्ठ रहेंगे तथा सभी परिवारिक जनों से यथोचित स्नेह तथा सम्मान अर्जित करेंगे। आपका शारीरिक कद भी मध्यम रहेक्षा। आप शुभकर्यों को करने के लिए हमेशा रूचिशील रहेंगे। आपके सत्कार्यों से अन्य सामाजिक लोग भी लाभान्वित रहेंगे। आप विपुल धनैश्वर्य से सुसम्पन्न रहेंगे तथा समाज में एक धनाढ्य व्यक्ति के रूप में आपकी ख्याति रहेगी। साथ ही आपमें अभिमान का भाव भी विद्यमान रहेगा एवं समय समय पर आप इसका प्रदर्शन भी करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप एक यशस्वी पुरूष होंगे एवं समाज में पूर्ण रूप से दूर दूर तक आपकी ख्याति रहेगी।

कुलस्य मध्येऽधिकभूषणं च नात्युच्चदेहः शुभकर्मकर्ता।
यस्तोत्तराभाद्रपदा च जन्यां धन्यो भवेन्मानधनो वदान्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् उत्तराभाद्रपद में उत्पन्न जातक कुल में श्रेष्ठ, मध्यम देह वाला, शुभकर्मों को करने वाला, धनाढ्य, अभिमानी और कीर्तिशाली होता है।

आप विविध प्रकार के सत्वगुणों से हमेशा सम्पन्न रहेंगे तथा जीवन में यत्नपूर्वक इनका पालन करते रहेंगे। साथ ही आप में त्याग की भावना भी विद्यमान रहेगी एवं अवसरानुकूल परिवार या समाज के मध्य अपनी इस प्रवृति का आप अनुपालन करते रहेंगे। आप एक धनवान पुरूष होंगे एवं नाना प्रकार के शास्त्रों का आपको विस्तृत ड़ान रहेगा। फलतः एक विद्वान के रूप में भी समाज में आपकी पूर्ण प्रतिष्ठा रहेगी।

चाहिर्बुध्न्यजमानवो मृदुगुणस्त्यागी धनी पंडितः।
जातक परिजातः

अर्थात् उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र में उत्पन्न जातक मृदुगुणों से सम्पन्न अर्थात् सात्विक, धनी, त्यागी और पंडित होता है।

भाषण देने की कला में आप निपुण दौरान आपकी- ओजस्वी वक्तव्यों से सभी लोग प्रभावित एवं प्रसन्न रहेगे। जीवन में आवश्यक सुखसंसाधनों से भी आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगे। साथ ही आप विस्तृत परिवार के भी स्वामी होंगे एवं पुत्र आदि से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे। आप शत्रुओं को पराजित करने में भी सफल रहेंगे तथा वे भी आपसे भयभीत एवं प्रभावित रहेंगे। इसके अतिरिक्त धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा नियम पूर्वक धर्माचरण में तत्पर रहेंगे।

वक्ता सुखी प्रजावान जितशत्रुधार्मिको द्वितीयासु।
बृहज्जातकम्

अर्थात् उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र का जातक वक्ता, जीवन में सुखी, बहुत पुत्र एवं पौत्रों से युक्त, शत्रुओं को जीतने वाला तथा धार्मिक आचरण से सम्पन्न होता है।

आप एक गौरव शाली व्यक्ति होंगे एवं अपने अच्छे कार्यों से समाज में गौरव प्राप्त करेंगे। साथ ही धर्म के विषय में भी आपको विस्तृत ज्ञान रहेगा तथा समाज में आप एक श्रद्धेय एवं सम्मानित व्यक्ति होंगे। साथ ही आपका समाज में प्रभुत्व भी स्थापित रहेगा। इसके अतिरिक्त आप एक साहसी व्यक्ति होंगे एवं शौर्ययुक्त कार्यों को सम्पन्न करने के लिए सर्वदा उत्सुक एवं तत्पर रहेंगे।

गौरः ससत्वो धर्मज्ञः शत्रुघाती परामरः।
उत्तराभाद्रपदजो नरः साहिसको भवेत।।
मानसागरी

अर्थात् उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र में पैदा हुआ मनुष्य गौरवर्ण, धर्म का ज्ञाता, शत्रुओं का नाश करने वाला, देवताओं के तुल्य, सत्वगुण प्रधान एवं साहसी होता है।

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ हैं। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने से जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते हैं। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता है। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनों से भी हीन रहता है। सांसारिक कार्यों में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता अर्जित होती है। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्याधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती है। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित है। अतः आपके लिए यह अशुभ नहीं रहेगा।

अतः आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शत्रु अल्प मात्रा में रहेंगे तथा वे आपसे पराजित तथा प्रभावित होंगे। परन्तु कभी कभी आपके स्वभाव में क्रोध तथा उग्रता का भाव भी दृष्टिगोचर होगा। आपका सौन्दर्य आकर्षक होगा एवं शरीर में पूर्ण रूप से कोमलता विद्यमान रहेगी। आप अपने जीवन में विविध प्रकार के सुखसंसाधनों को अर्जित करेंगे तथा प्रसन्नताा पूर्वक उसका उपभोग करने में भी सफल रहेंगे। द्रव्यों के प्रति भी यदा कदा आपकी आसक्ति रहेगी एवं कभी कभी सामान्य बीमारियों से भी आप पीड़ित रहेंगे।

मीन राशि में पैदा होने के कारण आपका शारीरिक सौन्दर्य सुन्दर एवं आकर्षक रहेगा तथा नासिका उन्नत रहेगी। आपके नेत्र अत्याधिक सुन्दर होंगे तथा शरीर के सभी अंग सुडौल एवं सुन्दरता से युक्त रहेंगे। आपकी कमर भी पतली होगी। शिल्प या चित्रकारी के क्षेत्र में आप विशेष योग्यता एवं यश प्राप्त करने में भी सफल हो सकेंगे। आपके शत्रु आपसे भयभीत रहेंगे एवं उन्हे पराजित करने में आप सर्वदा सक्षम रहेंगे। आप कई शास्त्रों का परिश्रम पूर्वक ज्ञान प्राप्त करेंगे एवं एक विद्वान के रूप में समाज में पूर्ण सम्मान तथा प्रतिष्ठा भी अर्जित करेंगे। संगीत के प्रति भी आपकी हार्दिक रूचि रहेगी एवं इसका आपको अच्छा ज्ञान रहेगा।

आप एक धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा समस्त धार्मिक कृत्यों का यत्नपूर्वक आचरण करने के लिए उद्यत रहेंगे। स्त्री वर्ग में भी आप पूर्ण रूप से प्रिय एवं आदर के पात्र होंगे। आपकी वाणी अत्यन्त ही मधुर एवं प्रिय होगी जिससे अन्य लोग आपसे प्रायः प्रसन्न ही रहेंगे। जीवन में आप समस्त सुखसंसाधनों से युक्त रहेंगे तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आप सरकारी सेवा में भी तत्पर रहेंगे एवं खान से निकाले गये द्रव्यों से आजीविकार्जन तथा लाभ प्राप्त करेंगे। लेकिन स्त्री से आप प्रायः पराजित रहेंगे एवं समस्त सांसारिक कार्यों को उसी के निर्देश तथा कथनानुसार सम्पन्न करेंगे। आपका स्वभाव भी अच्छा रहेगा एवं अन्य जनों से आपके मधुर एवं मित्रतापूर्ण संबंध रहेंगे। साथ ही समुद्री जहाज में यात्रा करने या नावादि में सैर करने में आपको हार्दिक प्रसन्नता प्राप्त होगी। इसके अतिरिक्त आप एक दानी पुरूष भी रहेंगे एवं यथा शक्ति अपनी इस प्रवृति का अनुपालन करते रहेंगे।

शिल्पोत्पन्नाधिकरोळहितजयनिपुणः शास्त्रविच्चारुदेहो।
गेयज्ञो धर्मनिष्ठो बहुयुवतिरतः सौख्यभाक् भूपसेवी।।
ईष्टत्कोपो महत्कः सुखनिधिधनभाक् स्त्रीजितः सत्स्वभावो।
यानासक्तः समुद्रे तिमियुगलगते शीतगौ दानशीलः।।
सारावली

आप समुद्र या जल से निकाले हुए पदार्थो से यथा शंख, मोती आदि रत्नों से पूर्ण रूपेण लाभ अर्जित करते रहेंगे। साथ ही आप अपने जीवन में किसी अन्य व्यक्ति, मित्र या संबंधी की धन सम्पत्ति को भी प्राप्त कर सकेंगे एवं सुखपूर्वक उसका उपभोग भी करेंगे। स्त्रियोचित वस्त्रों के प्रति आपके मन में विशेष अनुराग की भावना रहेगी। साथ ही आपके शरीर का कद भी सामान्य ही रहेगा।

जलपरधनभोक्ता दारवासोळनुरक्तः।
समरूचिरशरीरस्तुङ्गनासो बृहत्कः।।
अभिभवति सपत्नान् स्त्रीजितश्चारुदृष्टिः।
द्युतिनिधि धनभोगी पंडितश्चान्त्यराशौ।।
बृहज्जातकम्

जल पीने की इच्छा आपकी बार बार होती रहेगी तथा दिन में कई बार इसका उपयोग करेंगे। आप अपनी पत्नी पर पूर्ण विश्वास करेंगे तथा उससे पूर्ण प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। आप एक उत्तम श्रेणी के विद्वान होंगे एवं कृतड़ता के भाव से हमेशा युक्त रहेंगे तथा अन्य किसी व्यक्ति के द्वारा उपकृत होने पर आप पूर्ण रूप से उसका उपकार स्वीकार करेंगे एवं हार्दिक आभार भी प्रकट करेंगे। आपके इन सद्गुणों से अन्य लोग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप एक सौभाग्यशाली पुरूष होगे तथा आपके अधिकांश कार्य भाग्यबल से ही सिद्ध होते रहेंगे।

अत्यम्बुपानः समचारुदेहः स्वदारगस्तोयजवित्तभोक्ता।
विद्वान्कृतज्ञो ळमिभवत्यळमित्रान् शुभेक्षणो भाग्ययुतोळन्त्यराशौ।।
फलदीपिका

आप जितेन्द्रिय पुरूष होंगे एवं इन्द्रियों पर पूर्ण रूप से संयम रखकर संयमपूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे। आप एक चतुर तथा बुद्धिमान व्यक्ति होंगे एवं चतुराई तथा बुद्धिमता से अपने सभी सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगे एवं उनमें सफलता भी प्राप्त करेंगे। जल क्रीड़ा में भी आपकी इच्छा रहेगी एवं इससे आपको आनन्द की प्राप्ति होगी। साथ ही आपकी बुद्धि निर्मलता से युक्त रहेगी एवं धोखा या छल का इसमें आभाव रहेगा। कई प्रकार के शस्त्रों को चलाने में भी आप निपुण रहेंगे।

शशिनि मीनगते विजितेन्द्रियो बहुगुणः कुशलो जललालसः।
विमलधीः किल शस्त्रकलादरस्त्व बलताबलताकलितो नरः।।
जातकाभरणम्

आप अपना अधिकांश समय आजीविकार्जन पर ही सामान्य रूप से व्यतीत करेंगे। साथ ही कभी कभी आपके आय स्त्रोतों में भी बाधा आएगी जिससे आपको आर्थिक रूप से कष्ट प्राप्त करेंगे। आप को पिता से पूर्ण धन सम्पत्ति की प्राप्ति होगी तथा जीवन में आनन्द पूर्वक आप इसका उपभोग भी करेंगे आप में साहस का अभाव नहीं रहेगा एवं साहसिक कार्यों को करने के लिए आप प्रायः इच्छुक एवं तत्पर रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप में सन्तुष्टि के भाव की प्रधानता रहेगी एवं जो कुछ भी आपके पास हो उसी में ही आप प्रसन्न रहेंगे एवं सन्तोष प्राप्त करेंगे।

जलचरधनभोक्ता मोहयुक्तोळप्रशस्तः।
उदरभरणदेहस्तुङ्गमांसो डध्यः।।
अभिलषति सपत्नी स्त्रीजितश्च चारूकान्तिः।
पितृधनजनभोगी पीडितो मीनराशिः।
तुष्टः साहसी क्रोधयुक्तः मीनराशिर्मनुष्यः।।
जातकदीपिका

आप स्वभाव से ही गम्भीरता से युक्त रहेंगे एवं शौर्यादि गुणों से भी आप सर्वदा सुशोभित रहेंगे। समाज में आप का आदर एक सर्वमान्य प्रधान पुरूष के रूप में किया जाएगा एवं सभी लोग आपके प्रभाव को हार्दिक रूप से स्वीकार करेंगे। साथ ही आपकी प्रवृति कंजूसी से भी युक्त रहेगी एवं धन संचय करने में विशेष रूचिशील रहेंगे। आपकी कृपणता से अन्य लोग आपसे अप्रसन्न भी होंगे। आप अपने परिवार या कुल में सर्वसम्माननीय एवं श्रेष्ठ समझे जाएंगे तथा सभी पारिवारिक लोग आपसे स्नेह रखेंगे। आपकी सेवा कार्यों में भी रूचि रहेगी तथा इनको करने में आप सर्वदा उद्यत रहेंगे। आपकी गमन गति तीव्र होगी तथा तेज चलना आपको रूचिकर लगेगा। आपका आचरण भी श्रेष्ठ रहेगा तथा बन्धुवर्ग के आप अत्यन्त प्रिय रहेंगे।

गम्भीरचेष्टितः शूरः पटुवाक्यो नरोत्तमः।
कोपनः कृपणो ज्ञानी गुणश्रेष्ठः कुल प्रियः।।
नित्यसेवी शीघ्रगामी गाधंर्वकुशलः शुभः।।
मीन राशौ समुत्पन्नौ जायते बन्धुवत्सलः।।

मानसागरी

आपका व्यक्तित्व अत्यन्त ही आकर्षक रहेगा। साथ ही विद्वता की भी आप में प्रवलता रहेगी। अतः सभी लोग आपका आदर करेंगे।

मीनस्थे मृगलाञ्छने वरतनुर्विद्वान बहुस्त्रीपतिः।।
जातक परिजातः

मनुष्य गण में जन्म होने के कारण आप धार्मिक व्यक्ति होंगे तथा विप्र एवं देवताओं के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा एवं सेवा का भाव विद्यमान रहेगा परन्तु यदा कदा आप अभिमान का भी प्रदर्शन करेंगे जिससे अन्य लोग आपसे अप्रसन्न तथा असन्तुष्ट रहेंगे। आप एक दयावान पुरूष होंगे एवं दीन दुःखियों तथा जरूरत मन्द लोगों के प्रति आप यथाशक्ति इस भावना का प्रदर्शन करते रहेंगे। आप शारीरिक रूप से पूर्ण रूपेण बलशाली रहेंगे। साथ ही कई प्रकार के कार्यों को करने एवं कलाओं में भी आप निपुण रहेंगे। इससे आप समाज में ख्याति तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। आपकी शारीरिक कान्ति दर्शनीय रहेगी तथा अपने परिवार के अतिरिक्त अन्य कई लोगों को भी आपके द्वारा सुख की प्राप्ति होती रहेगी।

आप समाज में हमेशा एक आदरणीय व्यक्ति रहेंगे एवं धनैश्वर्य से युक्त रहकर प्रसन्नतापूर्वक उसका जीवन में उपभोग करेंगे। आपकी आखें भी बड़ी होंगी एवं निशाने बाजी की कला में आप हमेशा निपुण तथा ख्याति प्राप्त रहेंगे। इसके अतिरिक्त नगर के लोग पूर्ण रूप से आपके प्रभाव में रहेंगे एवं आपकी आज्ञा पालन के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे अतः समाज में आप एक उच्चाधिकार प्राप्त प्रतिष्ठित व्यक्ति रहेंगे।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

गो योनि में उत्पन्न होने के कारण आप स्त्रीवर्ग के हमेशा प्रिय रहेंगे एवं उनसे यथोचित मान सम्मान प्राप्त करेंगे। आप में हमेशा उत्साह का भाव बना रहेगा एवं समस्त कार्यों को अपनी उत्साही प्रवृति से सम्पन्न करेंगे। साथ ही आप में वाक्चातुर्य की भी प्रधानता रहेगी एवं अपनी चतुराई पूर्ण बातों में सबको आप प्रभावित करने में सफल रहेंगे।

स्त्रीणां प्रियः सदोत्साही बहुवाक्य विशारदः।
स्वल्पायुश्चनरो जातः गो योनौ न सशंयः।।
मानसागरी

अर्थात गोयोनि में उत्पन्न जातक स्त्रियों का प्रिय, सदा उत्साह में रहनेवाला,

वादविवाद में चतुर एवं अल्पायु होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठ भाव में स्थित है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। परन्तु समय समय पर उन्हें शारीरिक परेशानी होती रहेगी। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में आपको पूर्ण सहायता प्रदान करेंगी। साथ ही आपके कार्यों के व्यवधान आदि को भी दूर करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी एवं आपकी सफलता की हमेशा इच्छुक रहेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धावान रहेंगे एवं आजीवन उनकी सेवा के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही समय समय पर उनको अपनी ओर से वांछित सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगे। आपके संबंध मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद होंगे जिससे कभी कभी अप्रिय स्थिति उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय उपरान्त सब कुछ ठीक हो जाएगा।

आपके जन्म समय में सूर्य सप्तम भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं शारीरिक कष्ट की अनुभूति नहीं होगी। उनकी आयु भी लम्बी होगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। विविध प्रकार से धनार्जन करने में वे सफल रहेंगे तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना हार्दिक सहयोग देते रहेंगे। साथ ही आपके विवाह सम्पन्न करने में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा एवं आप उनके विश्वास पात्र भी रहेंगे।

आप भी उनका पूर्ण सम्मान करेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के उत्पन्न होने के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न हो सकता हैं। फिर भी आप नित्य उनकी सेवा तथा वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे।

आपके जन्म समय में मंगल छठे भाव में है अतः भाईयों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से अस्वस्थ रहेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नही रहेगा एवं आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा। जीवन में वे समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों तथा क्षेत्र में आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से आपको किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे। साथ ही शत्रुवर्ग से भी वे आपकी नित्य रक्षा करने में तत्पर रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा एवं हमेशा उनको अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपकी आपसी संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सामान्य रूप से मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में क्षणिक तनाव की स्थिति रहेगी परन्तु कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप सुख दुःख में उनकी वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से भी सहयोग देंगे एवं यत्नपूर्वक उनकी भलाई करने में तत्पर रहेंगे।

आपके लिए फाल्गुनमास, पंचमी, दशमी तथा पूर्णमासी तिथियां, आश्लेषा नक्षत्र,

वज्रयोग, विष्टिकरण, शुक्रवार चतुर्थ प्रहर तथा कुम्भ राशि का चन्द्रमा हमेशा अनिष्ट फल प्रदान करने वाला होगा। अतः आप 15 फरवरी से 14 मार्च के मध्य 5,10,15 तिथियों आश्लेषा नक्षत्र, वज्रयोग तथा विष्टि करण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रय विक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार, चतुर्थ प्रहर एवं कुम्भ राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित ही रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति भी सावधान रहना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति प्राप्ति में बाधा उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी जगदम्बा माता की श्रद्धापूर्वक आराधना करनी चाहिए तथा वृहस्पति वार के नियमित रूप से उपवास रखने चाहिए। साथ ही सोना, पीत पुखराज, पीत पुष्प, पीत चन्दन, चने की दाल, हल्दी आदि पदार्थो का किसी सुपात्र को दान देना चाहिए एवं वृहस्पति के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 16000 जप किसी योग्य विद्वान द्वारा सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपकी चिन्ताएं दूर होंगी एवं सर्वप्रकार के अनिष्ट प्रभाव दूर होकर शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी तथा सर्वत्र लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रों सः वृस्पतये नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं वृहस्पतये नमः।